नवम अध्याय

11119CH09

नाट्य-साहित्य

संस्कृत भाषा में विपुल नाट्य-साहित्य है। नाट्य-कृति में जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अनुकरण किया जाता है। दृश्यकाव्य होने के कारण नाट्य को रूपक भी कहते हैं। नाट्याचार्यों ने दस प्रकार के रूपक बतलाए हैं। इनमें सबसे उत्कृष्ट नाटक माना गया है। अत: प्राय: लोग नाट्य, रूपक, रूप और नाटक का प्रयोग समान अर्थ में करते हैं। संस्कृत भाषा में बहुत प्राचीन काल से रूपक लिखे जाते रहे हैं। यह परम्परा आज तक चल रही है। लिखने के साथ-साथ बहुत से रूपकों का अभिनय भी होता रहा है। राजसभाओं में विशिष्ट अवसरों पर संस्कृत रूपकों का अभिनय होता था। इसी प्रकार ग्रामों और नगरों में भी नाटक-मण्डलियाँ जनता के मनोरंजन के लिए नाटक खेलती थीं। जन सामान्य में संस्कृत का प्रयोग शिथिल हो गया तब लोक-प्रचलित भाषाओं में नाटक खेले जाने लगे। आज स्थिति यह हो गई है कि संस्कृत नाटक विशिष्ट तथा प्रबुद्ध वर्गों के बीच ही अभिनीत होते हैं।

संस्कृत रूपकों की उत्पत्ति कैसे हुई? इस पर पाश्चात्त्य विद्वानों ने पुत्तलिका नृत्य, धार्मिक नृत्य, वीर पूजा, यूनानी प्रभाव इत्यादि सिद्धान्त दिए हैं। भरत ने अपने नाट्यशास्त्र में आख्यान दिया है कि ब्रह्मा ने *ऋग्वेद* से पाठ्य (संवाद), *सामवेद* से गीत, *यजुर्वेद* से अभिनय तथा *अथर्ववेद* से रस लेकर नाट्य-वेद नामक नई विधा (जिसे पंचम वेद कहा गया) विकसित की। शिव और पार्वती ने क्रमश: ताण्डव और लास्य नामक नृत्य की व्यवस्था करके इस विद्या को समृद्ध किया। नाट्य शास्त्र के अनुसार भरत के पुत्रों और शिष्यों ने अप्सराओं और गन्धर्वों के साथ मिलकर अमृतमन्थन और त्रिपुरदाह नामक रूपकों का अभिनय किया था। ये ही प्रथम रूपक थे। वस्तुत: संस्कृत नाटकों की उत्पत्ति इसी देश में जनसामान्य के मनोरंजन के लिए हुई है।

नाट्यशास्त्र रूपकों के सम्बन्ध में व्यापक विधान करता है। इसमें रूपकों के भेद, कथा-वस्तु, पात्र, रस, अभिनय, गीत, नृत्य, रंगमंच की व्यवस्था, भाषा का प्रयोग आदि

© NCERT not to be republished

विषयों के विस्तृत नियम बतलाए गए हैं। इसका समय प्रथम शताब्दी ई. पू. से पहले माना गया है। इसमें नियमों की व्यापकता देखते हुए कहा जा सकता है कि बहुत प्राचीन काल में ही नाटक से सम्बद्ध विज्ञान विकसित हो गया था। इससे नाटकों के पर्याप्त मात्रा में लिखे जाने का भी अनुमान होता है। यहाँ कुछ प्रमुख संस्कृत नाटकों का परिचय दिया जा रहा है।

भास के नाटक

सन् 1912 ई. में टी. गणपति शास्त्री को त्रिवेन्द्रम (केरल) में 13 रूपकों की प्राप्ति हुई, जिन्हें उन्होंने भास की कृतियाँ बतलाकर प्रसिद्ध किया। इन रूपकों को 'भासनाटकचक्र' का संयुक्त नाम दिया गया। इसके पूर्व तक भास का नाम प्रसिद्ध संस्कृत नाटककार के रूप में जाना जाता था, किन्तु उनकी कृतियाँ नहीं मिली थीं। आरम्भ में उन सभी रूपकों को भासकृत मानने में विद्वानों को आपत्ति हुई, किन्तु धीरे-धीरे यह विवाद समाप्त हो गया। इन रूपकों में परस्पर इतना अधिक साम्य पाया गया कि इन्हें भासरचित मानने में कोई आपत्ति नहीं हुई।

भास के काल के विषय में विवाद है। गणपति शास्त्री ने उनका काल तीसरी शताब्दी ई. पू. माना है। कुछ भारतीय विद्वान् उनका स्थितिकाल 400 ई. पू. तक ले जाते हैं। अधिसंख्य विद्वानों का यह विचार है कि भास कालिदास (ई.पू. प्रथम शताब्दी) के पूर्ववर्ती हैं, क्योंकि कालिदास ने अपने नाटक *मालविकाग्निमित्रम्* में भास का नाम स्मरण किया है।

भास की रचनाओं को चार भागों में बाँटा जाता है। *प्रतिमा नाटक* और *अभिषेक* रामायण पर आश्रित हैं। *बालचरित, पञ्चरात्र, मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, दूतघटोत्कच, कर्णभार* तथा *ऊरुभंग* नामक रूपक *महाभारत* पर आश्रित हैं। *स्वप्नवासवदत्त* तथा *प्रतिज्ञायौगन्धरायण* उदयन और *वासवदत्ता* की प्रसिद्ध कथा पर आश्रित हैं। *अविमारक* और *चारुदत्त* कल्पित रूपक हैं। इन रूपकों में *स्वप्नवासवदत्त* सर्वाधिक विख्यात है। नाट्य-कला की दृष्टि से भी इसका महत्त्व है। भास के सभी रूपक नाट्य-कला की विकासावस्था के सूचक हैं। भाषा की सरलता, छोटे वाक्यों का प्रयोग, अभिनय की सुगमता, उचित हास्य-प्रयोग तथा कला की दृष्टि से भास के नाटक बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। *चारुदत्त* चार अंकों का रूपक है, जो बाद में शूद्रक के *मृच्छकटिक* की रचना का आधार बना। भास की कल्पना शक्ति तथा कथानक को सजाने का कौशल बहुत उत्कृष्ट है। भास के रूपकों में उस काल की सामाजिक और सांस्कृतिक सूचनाएँ पर्याप्त रूप से मिलती हैं। इनमें पात्रों का सजीव अंकन किया गया है तथा रस की योजना भी उत्कृष्ट रूप में हुई है।

Reprint 2025-26

कालिदास के नाटक

कालिदास ने तीन नाटक लिखे थे— *मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय* तथा *अभिज्ञानशाकुन्तल।* इनमें अन्तिम नाटक संस्कृत वाङ्मय में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

- **मालविकाग्निमित्र**— यह एक ऐतिहासिक नाटक है, जिसमें शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र का दासी के वेश में रहने वाली विदर्भ-राजकुमारी मालविका के प्रति प्रेम वर्णित है। इसमें पाँच अंक हैं। अग्निमित्र की महारानी धारिणी शरणागत मालविका को अपना लेती है और नृत्य आदि ललित-कलाओं की शिक्षा दिलाती है। राजा अपने अन्त:पुर में उसका नृत्य देखकर मुग्ध हो उठता है। अन्त:पुर में विरोध और तनाव होने पर भी विदूषक की सहायता से राजा और मालविका की भेंट हो जाती है। अन्तत: महारानी धारिणी अपने आप मालविका का हाथ अग्निमित्र के हाथ में दे देती है। इसमें अग्निमित्र के पिता पुष्यमित्र के द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ का भी संकेत है तथा अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र की यवनों पर विजय का भी वर्णन है। इस नाटक में राजप्रासाद के प्रणय-षडयन्त्रों का सजीव चित्रण है। प्रेम-प्रपंच की घटनाएँ चुभते संवादों और रसपूर्ण विनोद से भरी हैं। कालिदास की इस प्रथम नाट्य कृति में उनके कलात्मक विकास का बीज निहित है।
- **विक्रमोर्वशीय**— यह कालिदास का दूसरा नाटक है। इसमें राजा पुरुरवा और अप्सरा उर्वशी की प्रेम-कथा का वर्णन है। यह कथा *ऋग्वेद* और ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी आई है। परम्परा से मिले हुए कथानक को कालिदास ने बड़े कौशल से पाँच अंकों में फैलाया है। पुरुरवा स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को देखकर मुग्ध हो जाता है और उर्वशी का भी नायक के प्रति अनुराग होता है। महारानी राजा को उर्वशी से प्रेम करने की अनुमति देती है और उर्वशी को भी एक वर्ष के लिए पुरुरवा के साथ रहने की अनुमति मिल जाती है। चतुर्थ अंक में उर्वशी एक लता के रूप में बदल जाती है। पुरुरवा विलाप करता है। राजा के प्रेम से प्रभावित होकर इन्द्र उर्वशी को आजीवन राजा के साथ रहने की अनुमति दे देते हैं। इस नाटक में शृङ्गार के संयोग और विप्रलम्भ दोनों रूपों का अत्यन्त मार्मिक प्रयोग हुआ है। इसमें कालिदास की नाट्यकला और काव्यकला भी अधिक विकसित दिखाई पड़ती है। प्रकृति का मानवीय भावों के साथ अधिक सामंजस्य इसमें दिखाया गया है। उदाहरण के लिए उर्वशी के लता-रूप में परिणत हो जाने पर महाराज पुरुरवा सामने बहती नदी को ही अपनी प्रेयसी समझ बैठते हैं और उन्मादग्रस्त होकर उसका वर्णन करते हैं।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished

- **अभिज्ञानशाकुन्तल**— यह कालिदास का अमर नाटक है, जिसने समस्त संसार के लोगों को प्रभावित किया है। इसमें सात अंक है। दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेम-कथा इसमें चित्रित है। दुष्यन्त हस्तिनापुर का राजा है तथा शकुन्तला कण्व मुनि के आश्रम में पलने वाली एक सुन्दर कन्या है। आश्रम में दुष्यन्त कण्व की अनुपस्थिति में शकुन्तला से गान्धर्व विवाह करता है। कुछ दिन वहाँ रहकर वह राजधानी लौट जाता है। जाते समय वह शकुन्तला को शीघ्र बुला लेने का वचन देता है, किन्तु दुर्वासा के द्वारा शकुन्तला को दिए गए शाप के कारण वह उस वचन को भूल जाता है। इधर कण्व आश्रम में लौटकर गर्भवती शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी करते हैं। आश्रम के सभी चेतन व अचेतन पदार्थ इस दृश्य से व्याकुल हैं। चतुर्थ अंक में शकुन्तला की बिदाई का यह दृश्य उत्कृष्ट है। दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त शकुन्तला को पहचान नहीं पाता। उसके द्वारा दी गई अँगूठी भी शकुन्तला खो चुकी है। इसलिए पहचान का कोई उपाय भी नहीं रहता। अन्ततः शकुन्तला मारीच आश्रम में ले जाई जाती है, जहाँ वह भरत नाम के पुत्र को जन्म देती है। इधर जब दुष्यन्त को वह अँगूठी मिल जाती है तब सब कुछ स्मरण हो जाता है। वह बहुत पश्चात्ताप करता है। संयोगवश इन्द्र की सहायता करके लौटते समय दुष्यन्त मारीच आश्रम में जाता है और उसकी शकुन्तला तथा भरत से भेंट हो जाती है। इस प्रकार नाटक की सुखद समाप्ति होती है। इस नाटक में कालिदास की नाट्यकला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची है। घटनाओं का संयोजन, प्रेम का क्रमिक विकास, प्रकृति का मनोरम चित्रण, शकुन्तला की विदाई का कारुणिक दृश्य, विदूषक का हास्य, संवादों की अभिव्यंजना, शृङ्गार-रस का यथेष्ट निष्पादन, दुर्वासा के शाप की कल्पना—ये सभी मिलकर इस नाटक को बहुत ऊँचाई पर पहुँचाते हैं। कालिदास उपमा का प्रयोग करने में अत्यन्त कुशल हैं।

भारतीय परम्परा में इस नाटक के चतुर्थ अंक को और उसके भी चार श्लोकों को श्रेष्ठ बतलाया गया है।

काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्।।

जर्मन महाकवि गेटे ने इस नाटक की बहुत प्रशंसा की है कि वसन्त का पुष्प और ग्रीष्म का फल यदि एक साथ देखना हो, तो शकुन्तला में देखें। मानव-जीवन के मार्मिक पक्षों का निरूपण इसमें बहुत कुशलता से हुआ है।

Reprint 2025-26

अश्वघोष का शारिपुत्रप्रकरण

इसके लेखक अश्वघोष (प्रथम शताब्दी ई.) हैं। यह रूपक नौ अंकों में लिखा गया था। इसके कुछ अंश ताल-पत्रों पर लिखित मध्य एशिया में मिले हैं। इन पत्रों को संकलित करके प्रो. ल्यूडर्स ने वर्तमान शताब्दी के आरम्भ में जर्मनी में इनका प्रकाशन किया था। इसमें शारिपुत्र और मौद्गलायन द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की कथा है। आंशिक रूप से प्राप्त होने के कारण इसके कथानक का पूरा ज्ञान तो नहीं मिलता, किन्तु इसके विदूषक का प्राकृत-प्रयोग, छन्दों का प्रयोग, नाटक का अंकों में विभाजन इत्यादि तत्त्व संस्कृत नाट्य-विज्ञान के विकास का संकेत देते हैं। इस नाटक के साथ दो अन्य नाटकों के भी खण्डित अंश मिले थे। कुछ आधुनिक विद्वान् इन्हें भी *शारिपुत्रप्रकरण* का ही अंश मानते हैं। इसमें कीर्ति, धृति आदि प्रतीकात्मक पात्रों का सर्वप्रथम प्रयोग है। अश्वघोष के इस नाटक में शैली का संयम उनके महाकाव्यों के समान ही मिलता है।

शूद्रक का मृच्छकटिक

शूद्रक-रचित *मृच्छकटिक* 10 अंकों का रूपक है, जिसे प्रकरण नामक भेद में रखा जाता है। प्रकरण में कथावस्तु कल्पित और सामाजिक होती है, राजकीय वातावरण से यह दूर रहती है। व्यापारजीवी ब्राह्मण चारुदत्त इसका नायक है, जो उदारता के कारण निर्धन हो गया है। इसकी नायिका वसन्तसेना उज्जयिनी की प्रसिद्ध गणिका है। वह चारुदत्त से प्रेम करती है। उसके प्रेम में उन्मत्त राजा का श्यालक (साला) शकार इसका विरोध करता है। वह वसन्तसेना का गला दबा देता है और हत्या के झूठे आरोप में चारुदत्त को न्यायालय में पहुँचा देता है, किन्तु वसन्तसेना मरती नहीं। इसी बीच राजविप्लव होता है और पालक के स्थान पर आर्यक राजा बनता है। अकस्मात् ही जीवित वसन्तसेना के वध्यस्थान पर उपस्थित हो जाने के कारण, चारुदत्त को दी गई मृत्युदण्ड की सजा समाप्त हो जाती है और रूपक की सुखात्मक परिणति होती है।

चारुदत्त का पुत्र रोहसेन मिट्टी की गाड़ी का खिलौना नहीं चाहता, स्वर्णशकट चाहता है। नायिका वसन्तसेना उसकी गाड़ी पर अपने सोने के आभूषण डाल देती है। मिट्टी की गाड़ी का कथानक बहुत मार्मिक है। अत: इस रूपक का नाम *मृच्छकटिक* (मृत्-मिट्टी, शकटिक-खिलौने की गाड़ी) पड़ा है। यह प्रकरण विशुद्ध सामाजिक कथावस्तु पर आश्रित है। इसलिए किसी नगर के राजपथ पर घटी घटनाओं का इसमें यथार्थ चित्र मिलता है।

Reprint 2025-26

इसमें चारुदत्त जैसे पात्र के गुणों पर मुग्ध होकर वसन्तसेना जैसी गणिका अपने व्यवसाय को छोड़ देती है। दूसरी ओर इसमें शकार जैसा खलनायक भी है, जो राजा का साला होने के कारण अहंकारी है और दुष्टता करता रहता है। इसमें जुआ खेलने वाले जुआरी, घर में काम करने वाली दासी, राजतन्त्र की दुर्गति करने वाला राजा, चोरी करके अपनी प्रेमिका को आभूषण देने वाला प्रेमी, मित्र की निर्धनता में भी साथ देने वाला हास्य-पात्र विदूषक, पतिव्रता धूता (चारुदत्त की पत्नी) और धन से अधिक सद्गुणों की पूजा करने वाली गणिका वसन्तसेना जैसे अनेक पात्र हैं, जो इस प्रकरण में रोचकता और रोमांच उत्पन्न करते हैं। अपने युग के समाज और संस्कृति को यह सजीव रूप में उपस्थित करने वाला एक क्रान्तिकारी रूपक है।

मृच्छकटिक के लेखक शूद्रक के व्यक्तित्व और काल के विषय में बहुत विवाद है। इसकी प्रस्तावना में शूद्रक के राज्य करने और उसकी मृत्यु का भी उल्लेख है। निश्चित रूप से यह प्रस्तावना बाद में जोड़ी गई है। शूद्रक को कुछ लोग काल्पनिक पात्र मानते हैं। सामान्यत: तीसरी-चौथी शताब्दी ई. के उज्जैन का चित्र अंकित होने के कारण *मृच्छकटिक* की रचना इस काल में मानी जा सकती है।

विशाखदत्त का मुद्राराक्षस

यह विशाखदत्त-रचित सात अंकों का नाटक है, जो राजनीतिक कथानक से संबद्ध है। इसकी कथावस्तु मौर्य-वंश की स्थापना से जुड़ी है। विशाखदत्त का समय पाँचवी-छठी शताब्दी माना जाता है। लेखक राजनीति तथा अनेक शास्त्रों का महान् पण्डित था। इस नाटक में चाणक्य के द्वारा नन्द-राजाओं के विध्वंस का वर्णन किया गया है। इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य को पाटलिपुत्र के सिंहासन पर बैठाया जाता है। चाणक्य स्वयं राजनीति से संन्यास लेना चाहता है। इसलिए वह नन्दों के भूतपूर्व मन्त्री राक्षस को चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री बनाने का प्रयत्न करता है, किन्तु राक्षस नन्दों के प्रति स्वामिभक्ति रखता है। वह न चाणक्य को प्रतिष्ठित होते देखना चाहता है, न चन्द्रगुप्त को। वह मलयकेतु नामक राजा के साथ मिलकर चन्द्रगुप्त को राज्यच्युत करने की योजना बनाता है। इसलिए चाणक्य का काम बहुत कठिन है, फिर भी वह अपनी कूटनीति से राक्षस को असहाय बना देता है, मित्रों से उसे पृथक् कर देता है और अन्तत: राक्षस चन्द्रगुप्त का मन्त्री पद स्वीकार करने के लिए विवश हो जाता है। चाणक्य की कूटनीति में सर्वाधिक सहायता राक्षस की मुद्रा (मुहर के रूप में प्रयुक्त होने वाली अँगूठी) से मिलती है, जो संयोगवश चाणक्य के हाथ

© NCERT not to be republished

लग जाती है। यह मुद्रा ही राक्षस की पराजय का कारण बनती है। इसके आधार पर नाटक का नामकरण हुआ है।

इस नाटक में चाणक्य और राक्षस की कूटनीतियों का संघर्ष दिखाया गया है। यह परम्परा से हटकर लिखा गया नाटक है, क्योंकि इसमें न कोई नायिका है और न श्रृंगार रस ही है। यहाँ राजनीतिक संघर्ष की भव्य क्रीड़ा है, जहाँ दो परस्पर विपक्षी राजनीतिज्ञ भिड़े हुए हैं। राक्षस की पराजय इसलिए होती है कि वह भावुक और स्वामिभक्त है। चाणक्य उसकी योग्यता पर मुग्ध है। इसलिए स्वयं प्रधानमंत्री न बनकर वह राक्षस को ही इस पद पर बैठाने के लिए प्रयत्न करता है। संस्कृत के सभी नाटकों की अपेक्षा कथानक की सुव्यवस्थित अन्विति में यह नाटक आगे है। घटनाएँ योजना के अनुसार चलती हैं। उनमें विलक्षण सजावट है। अन्त में राक्षस का मन्त्रीपद स्वीकार करना सभी के लिए लाभदायक होता है; पाटलिपुत्र का राज्य, योग्य राजा और योग्य मन्त्री पाकर दृढ़ होता है। इस प्रकार चाणक्य का त्याग और राष्ट्रभक्ति भी इसमें प्रदर्शित है। इसमें प्रदर्शित कूटनीति आज के युग में भी अनुकरणीय है।

हर्ष के रूपक

राजा हर्ष या हर्षवर्धन का समय सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध है। ये स्थाण्वीश्वर (कुरूक्षेत्र के पास) के इतिहास प्रसिद्ध राजा थे। उन्होंने बाण, मयूर आदि कवियों को आश्रय दिया था। इनके समय में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत आया था। इन्होंने तीन रूपक लिखे, जिनमें दो नाटिकाएँ हैं— *प्रियदर्शिका* और *रत्नावली* तथा एक नाटक है– नागानन्द।

- **प्रियदर्शिका**— *प्रियदर्शिका* और रत्नावली एक ही प्रकार की कथावस्तु पर आश्रित नाटिकाएँ हैं। प्रत्येक में चार अंक हैं। दोनों के नायक उदयन हैं, परन्तु नायिका पृथक्-पृथक् हैं। *प्रियदर्शिका* नाटिका में प्रेमिका का नाम आरण्यका है, जो बाद में *प्रियदर्शिका* कही जाती है। राजा उदयन महारानी के भय से छिप-छिपकर नायिका से मिलता है। नायिका राजप्रासाद में ही शरणागत के रूप में रहती है। विदूषक राजा के प्रेम-व्यापार में सहायक होता है।
- **रत्नावली**— इस नाटिका की नायिका सागरिका है, क्योंकि उसकी रक्षा सागर से की गई थी। यही बाद में *रत्नावली* कही जाती है। उदयन का चरित्र धीरललित नायक का है, जो निश्चिन्त, कला-प्रेमी तथा सुखजीवी है। ऐसा प्रतीत होता है कि *प्रियदर्शिका*

Reprint 2025-26

नाटिका का संशोधन करने के लिए हर्ष ने रत्नावली की रचना की थी। दोनों पर कालिदास के *मालविकाग्निमित्र* का बहुत प्रभाव है।

- **नागानन्द**— यह दोनों से कथानक और प्रभाव में भिन्न है। यह जीमूतवाहन की कथा से सम्बद्ध है। इसमें पांच अंक हैं। इसके पूर्वार्द्ध में जीमूतवाहन और मलयवती की प्रेम-कथा का वर्णन है, किन्तु उत्तरार्द्ध में जीमूतवाहन के आत्मत्याग की कथा है। वह गरुड़ से नाग की रक्षा करता है और शंखचूड़ के स्थान पर स्वयं गरुड़ का भक्ष्य बनता है। गरुड़ उसके त्याग से प्रसन्न होकर सभी नागों को जीवित कर देते हैं। इस प्रकार यह महायान बौद्ध धर्म के आदर्श के अनुकूल बोधिसत्त्व की कथा को नाटक के रूप में प्रस्तुत करता है। मानव-जाति को अहिंसा की शिक्षा देना इसका उद्देश्य है। इस नाटक को हर्ष ने उस समय लिखा था, जब वे बौद्ध मत स्वीकार कर चुके थे। बौद्धों के बीच इस नाटक का बहुत प्रचार रहा है। नाटक दु:खान्त रूप धारण कर लेता, किन्तु गौरी देवी के दिव्य प्रसाद की कथा के समावेश से सुखान्त बन जाता है।

हर्ष ने अपने रूपकों को सरल भाषा में प्रसादगुण से युक्त शैली में लिखा है। उन्होंने जहाँ नाटिकाओं में शृंगार रस की धारा बहायी है, वहाँ *नागानन्द* में शान्त रस को मुख्य रस रखा है। कला और कथानक की दृष्टि से उत्कृष्ट न होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से हर्ष के रूपकों का महत्त्व है। नाट्य-संविधान की दृष्टि से *रत्नावली* बहुत महत्त्व रखती है, क्योंकि काव्यशास्त्र के आचार्यों ने इस नाटिका के अनेक स्थलों को प्रचुर मात्रा में उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है।

भवभूति के रूपक

भवभूति कालिदास के बाद दूसरे उत्कृष्ट नाटककार माने जाते हैं। सभी नाटककारों की अपेक्षा उन्होंने अपने विषय में अधिक सूचना दी है। वे विदर्भ-प्रदेश के निवासी थे। वे *यजुर्वेद* की तैत्तिरीय शाखा के अध्येता ब्राह्मण-वंश में उत्पन्न हुए थे। उनका दूसरा नाम श्रीकण्ठ था। उनका समय 700 ई. के आसपास माना जाता है। भवभूति कई शास्त्रों के पण्डित तथा अद्भुत शैलीकार थे। इन्होंने तीन रूपक लिखे जिनमें *महावीरचरित* और *उत्तररामचरित* राम की कथा पर आश्रित नाटक हैं, *मालतीमाधव* प्रकरण है।

- **महावीरचरित**— इसमें सीता-विवाह से आरम्भ करके राज्याभिषेक तक राम के जीवन की घटनाएँ सात अंकों में वर्णित हैं। इसका प्रमुख विषय है राम को नष्ट करने के लिए किए गए रावण के प्रयत्नों की विफलता तथा राम का सकुशल अयोध्या

Reprint 2025-26

लौट आना। नाटक की कथावस्तु राम-रावण के बीच राजनीतिक षड्यन्त्र के आधार पर विकसित हुई है। इसमें रावण का मन्त्री माल्यवान् महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रावण का राम के प्रति क्रोध तभी से है, जब उसे सीता और जनक द्वारा सीता के वर के रूप में अस्वीकार कर दिया गया था। अन्य राक्षसों के वध से रावण बौखला उठता है। परशुराम और बालि की कथाएँ राम को नष्ट करने की माल्यवान् की योजना का अंश हैं। राम को वनवास दिलाने में मन्थरा वेश में शूर्पणखा कैकेयी के पास जाती है। यह भी भवभूति की कल्पना है। अन्त में रावण और माल्यवान् की युद्धनीति विफल हो जाती है। इस नाटक में भवभूति नाटककार से अधिक कवि के रूप में प्रकट होते हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रभाव में रहकर भवभूति ने इसकी रचना की है। इसलिए राजनीतिक षड्यन्त्र और नाट्यकला में सामंजस्य नहीं रह पाया है।

- **मालतीमाधव**— यह 10 अंकों का एक प्रकरण है। इसमें भूरिवसु की पुत्री मालती तथा देवरात के पुत्र माधव के विवाह की मुख्य कथा है। दोनों के विवाह का निश्चय उन दोनों के पिता तभी कर चुके थे, जब वे स्वयं विद्यार्थी थे, किन्तु वे अपनी योजना कार्यान्वित नहीं कर सके थे। कारण यह था कि भूरिवसु जिस राजा का मन्त्री था, वह राजा मालती का विवाह अपने चचेरे भाई नन्दन के साथ कराना चाहता था। इसलिए कामन्दकी नामक योगिनी को मालती और माधव के विवाह का भार दिया जाता है। इसके साथ-साथ मकरन्द और मदयन्तिका का प्रेम-प्रसंग भी चलता है। यहाँ मुख्य प्रेमी गौण हो गए हैं और गौण प्रेमी अधिक रोचक हो गए हैं। मालती का अपहरण कापालिकों द्वारा किया जाता है और अघोरघण्ट नामक कापालिक मालती की बलि देने की तैयारी करता है। संयोगवश माधव अघोरघण्ट को मारकर मालती को बचा लेता है। उन दोनों का गुप्त विवाह हो जाता है। उधर मकरन्द का मालती के वेश में नन्दन से विवाह कराया जाता है, जिससे नाटक में हास्य-तत्त्व की सृष्टि होती है।

भवभूति इस नाटक की रचना में कामशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र के प्रभाव में थे। इसीलिए उन्होंने प्रेम की सभी सूक्ष्म अवस्थाओं का वर्णन किया है तथा विभिन्न रसों के परिपाक का भी प्रयास किया है। इस नाटक में श्रृंगार मुख्य रस है, किन्तु भयानक, अद्भुत, रौद्र आदि रस भी यथेष्ट हैं। श्मशान, तान्त्रिक साधना आदि का निरूपण इसमें बहुत रोचक और काव्यात्मक है।

Reprint 2025-26

- **उत्तररामचरित**— यह भवभूति का सर्वश्रेष्ठ नाटक है। **उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते**। इसमें राम के उत्तरवर्ती जीवन के करुण पक्ष का नाट्य रूप प्रस्तुत किया गया है। इसमें सात अंक हैं। रावण को मारकर जब राम अयोध्या लौटते हैं, तब उनके सुख के दिन क्षणिक रूप में आते हैं, क्योंकि वे गुप्तचर से सीता के विषय में लोकापवाद सुनते हैं। राम के आदेश से लक्ष्मण सीता को गंगा तट पर वन में छोड़ देते हैं। सीता गर्भवती हैं। वह वाल्मीकि के आश्रम में पहुँच जाती हैं, जहाँ उनके कुश और लव दो पुत्र होते हैं। राम सीता के त्याग से भीतर-ही-भीतर घुटते रहते हैं, किन्तु अपने दु:ख को प्रकट नहीं कर पाते। शम्बूक का वध करने के लिए वे दण्डकारण्य पहुँचते हैं, जहाँ पंचवटी के दृश्य को देखकर विह्वल हो उठते हैं। भवभूति ने इस नाटक के तृतीय अंक में छाया-दृश्य की योजना की है, जिसमें सीता अदृश्य राम को देखती है। राम का भीतरी भाव यहाँ मुक्त रूप से प्रकट होता है। राम अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ करते हैं। यज्ञ का अश्व भ्रमण करते हुए वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचता है, जहाँ लव उसे पकड़ लेता है। लक्ष्मण का पुत्र चन्द्रकेतु अश्वरक्षक है, इसलिए लव से उसका युद्ध होता है। लव जृम्भास्त्र का प्रयोग करता है, जिससे राम की सेना सो जाती है। राम स्वयं युद्धभूमि में आकर अपने पुत्रों को पहचानते हैं। सप्तम अंक में अयोध्या में वाल्मीकि द्वारा रचित रामविषयक नाटक का अभिनय होता है, जिसमें सीता के परित्याग के बाद की घटनाएँ दिखाई जाती हैं। नाटक के बीच नाटक का यह प्रयोग गर्भनाटक कहलाता है। इसमें सीता को लोकापवाद से मुक्त करके राम से मिला दिया जाता है। इस प्रकार नाटक की सुखद परिणति होती है।

इस नाटक में भवभूति ने नाट्य तथा काव्य का अद्भुत सामंजस्य दिखाया है। इस नाटक का कथानक करुण रस से भरा है। इसमें निम्न कोटि का हास्य बिल्कुल नहीं है। *अभिज्ञानशाकुन्तल* में जहाँ आनन्द और सौन्दर्य का वातावरण है, वहाँ *उत्तररामचरित* गम्भीर और कारुणिक वातावरण प्रस्तुत करता है। इसलिए इस नाटक में वर्णित प्रकृति भी भयावह और विस्मय उत्पन्न करने वाली है। गम्भीरता, आध्यात्मिकता और दाम्पत्य-प्रेम की उदात्तता में भवभूति अद्वितीय हैं।

अपने तीन रूपकों में भवभूति एक योजना के अनुसार काम करते हैं। *महावीरचरित* जहाँ जीवन के प्रथम चरण से सम्बद्ध नायक और नायिका को चुनकर वीर रस को मुख्य रस बनाता है, वहाँ *मालतीमाधव* नायक-नायिका और शृङ्गार रस को प्रमुखता देता है।

Reprint 2025-26

उत्तररामचरित में नायक-नायिका की प्रौढ़ावस्था के कारण करुण रस को चुना गया है। इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन को उन्होंने तीन नाटकों में व्यवस्थित किया है।

भट्टनारायण का वेणीसंहार

इसके लेखक भट्टनारायण हैं। इनका समय सातवीं या आठवीं शताब्दी ई. है। भट्टनारायण बंगाल के राजा आदिशूर के द्वारा निमन्त्रित पाँच कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में से एक थे। वेणीसंहार छ: अंकों का वीर रस प्रधान नाटक है। इसका कथानक *महाभारत* पर आश्रित है। दु:शासन द्वारा हाथों से घसीटकर द्यूतभवन में लाई गई द्रौपदी की वेणी (खुले केश) का दु:शासनवध के बाद भीम द्वारा रक्त-रंजित हाथों से बाँधा जाना इस नाटक का मुख्य कथानक है, जिससे इसका नामकरण भी हुआ है। भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि जिस वेणी को दु:शासन ने खींचा है, उसे उसी के रक्त से रंजित हाथों से मैं बाँधूंगा। बहुत बड़ा कथानक हो जाने से कहीं-कहीं इसका स्वरूप कथात्मक हो गया है। भट्टनारायण ने भीम, द्रौपदी, कर्ण तथा अश्वत्थामा के चरित्र-चित्रण बहुत कुशलतापूर्वक किए हैं। नाटक के बीच में दुर्योधन और भानुमती के प्रेम का दृश्य बहुत प्रभावपूर्ण है, किन्तु विद्वानों ने नाटक के वीर रस प्रधान वातावरण में इसे अनुचित कहा है।

कथानक के संयोजन में नाटककार कोई योगदान नहीं कर सका है, किन्तु कुछ रोचक और प्रभावपूर्ण दृश्य उसने अवश्य दिए हैं। भट्टनारायण की शैली ओजोगुण से परिपूर्ण गौडी है, जिसमें लम्बे समास भरे हैं। वीर रस प्रधान होने के कारण इसकी बहुत प्रसिद्धि है। नाट्यशास्त्रियों ने इससे बहुत उद्धरण दिए हैं।

अन्य नाटक

संस्कृत भाषा में लिखे गए नाटकों की संख्या हजार से भी अधिक है। इसमें प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। रूपकों के विभिन्न भेदों की रचना संस्कृत में होती रही है। इस प्रकार प्रकरण, भाण, प्रहसन, व्यायोग इत्यादि विविध रूपकों का लेखन होता रहा है। सर्वाधिक प्रचलित रूपक नाटक ही है। संस्कृत में कुछ नाटक प्रतीकात्मक भी हैं, जो भावात्मक विषयों को (जैसे— मोह, काम, क्रोध, विवेक, शान्ति, भक्ति) पात्र बनाकर लिखे गए हैं। ऐसे नाटकों में जयन्त भट्ट (नवीं शताब्दी ई.) का *आगमडम्बर* अथवा *षण्मतनाटक*, कृष्णमिश्र (ग्यारहवी शताब्दी ई.) का *प्रबोधचन्द्रोदय*, यश:पाल (तेरहवीं शताब्दी ई.) का *मोहराजपराजय*, वेदान्तदेशिक (चौदहवीं शताब्दी ई.) का *संकल्पसूर्योदय*, कर्णपूर (सोलहवीं शताब्दी ई.) का *चैतन्यचन्द्रोदय* इत्यादि प्रमुख हैं।

Reprint 2025-26

भट्टनारायण के बाद जितने नाटककार हुए, उन्होंने प्राय: लक्षण-ग्रन्थों के आधार पर नाटक लिखे। इससे इस विधा का स्वाभाविक विकास समाप्त हो गया। ऐसे नाटककारों में मुरारि *(अनर्घराघव),* दामोदर मिश्र *(हनुमन्नाटक),* राजशेखर *(बालरामायण, बालभारत, कर्पूरमञ्जरी* तथा *विद्धशालभञ्जिका* इत्यादि प्रमुख हैं।

प्राचीन काल के चार भाणों का एक संग्रह मद्रास से 1922 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसमें शूद्रक का पद्मप्राभृतक, वररुचि की *उभयाभिसारिका,* ईश्वरदत्त का *धूर्तविटसंवाद* तथा श्यामिलक का *पादताडितक* भाण थे। इनमें समाज के तथाकथित उच्च-वर्ग की विरूपता तथा निम्न-वर्ग का सजीव और रोचक चित्रण है। सातवीं शताब्दी के पल्लव नरेश महेन्द्रविक्रम का *मत्तविलासप्रहसन* तात्कालिक धार्मिक पाखण्ड का वर्णन करता है। बारहवीं शताब्दी ई. के वत्सराज ने छ: प्रकार के रूपकों की रचना की थी। ये हैं— *किरातार्जुनीय* (व्यायोग), *रुक्मिणीहरण* (ईहामृग), *त्रिपुरदाह* (डिम), *समुद्रमन्थन* (समवकार), *कर्पूरचरित* (भाण) तथा *हास्यचूडामणि* (प्रहसन)। इसी प्रकार विभिन्न युगों में विभिन्न प्रकार के रूपक लिखे गए।

आधुनिक काल में संस्कृत नाटकों के कथानक में विविधता पाई जाती है। महापुरुषों की जीवनी, प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाएँ, राजनीतिक व्यवस्थाएँ, सामाजिक कुरीतियाँ इत्यादि विविध विषयों के कथानक नाटकों में लिए जाते हैं।

Reprint 2025-26

ध्यातव्य बिन्दु

- रूपक दृश्य-काव्य का एक नाम है जिसके दस प्रकार हैं। रूपक के दस प्रकारों में नाटक सबसे प्रमुख है।
- आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक पौराणिक मतों को स्वीकार किया है। भरत मुनि के अनुसार ब्रह्मा ने नाट्य वेद को उत्पन्न किया और शङ्कर तथा पार्वती ने इसे समृद्ध किया।
- टी. गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की। जिसका विभाजन चार भागों में किया गया है—

(क) रामायण पर आश्रित—	1. प्रतिमा	2. अभिषेक
(ख) महाभारत पर आश्रित—	1. बालचरित	2. पञ्चरात्र
	3. मध्यमव्यायोग	4. दूतवाक्य
	5. दूतघटोत्कच	6. कर्णभार
	7. ऊरुभंग	
(ग) उदयन की कथा पर आश्रित	1. स्वप्नवासवदत्त	
	2. प्रतिज्ञायौगन्धरायण	
(घ) कल्पित रूपक	1. अविमारक	2. चारुदत्त

- कालिदास के तीन प्रमुख नाटक हैं— *मालाविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय* और *अभिज्ञानशाकुन्तल*
- अश्वघोष के द्वारा रचित शारिपुत्र प्रकरण में शारिपुत्र और मौद्गलायन के द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की कथा है।
- शूद्रक-रचित *मृच्छकटिक* दस अंकों का सामाजिक रूपक है।
- विशाखदत्त द्वारा रचित *मुद्राराक्षस* सात अंकों का राजनीतिक नाटक है।
- हर्ष ने तीन रूपक लिखे थे, जिसमें दो नाटिकाएँ— *प्रियदर्शिका* और *रत्नावली* तथा एक नाटक *नागानन्द* है।
- भवभूति ने तीन रूपक लिखे हैं, जिनमें *महावीरचरित* और *उत्तररामचरित* राम की कथा पर आश्रित नाटक हैं और *मालतीमाधव* प्रकरण है।
- भट्टनारायण ने *वेणीसंहार* की रचना की जिसकी विषयवस्तु महाभारत पर आधारित है।
- संस्कृत भाषा में अन्य नाटकों की संख्या हजार से अधिक है।

Reprint 2025-26

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. रूपक किसे कहते हैं? उसके भेदों का उल्लेख कीजिए।
प्र. 2. रूपकों में नाटक का स्थान बताइए।
प्र. 3. संस्कृत नाटक का उद्भव कैसे हुआ?
प्र. 4. नाट्यशास्त्र का लेखक कौन है?
प्र. 5. रूपकों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भरतमुनि ने क्या कहा है?
प्र. 6. *शारिपुत्रप्रकरण* को किस कथा के आधार पर लिखा गया?
प्र. 7. भास के सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक का नाम लिखिए।
प्र. 8. *मृच्छकटिक* किस प्रकार का रूपक माना जाता है? उसकी कथावस्तु का आधार क्या है?
प्र. 9. कालिदास ने कितने नाटक लिखे हैं? उनके नाम लिखिए।
प्र. 10. कालिदास का कौन-सा नाटक सारे संसार में प्रसिद्ध है और क्यों?
प्र. 11. *मुद्राराक्षस* नाटक की रचना किसने की? इसमें किन पात्रों के बीच संघर्ष हुआ?
प्र. 12. अन्य नाटकों और *मुद्राराक्षस* में क्या अन्तर है?
प्र. 13. भवभूति कौन थे? उनकी प्रसिद्धि का कारण बताइए।
प्र. 14. *उत्तररामचरित* में क्या वर्णन किया गया है? उसमें कितने अंक हैं?
प्र. 15. टिप्पणी लिखिए—

(क) गर्भनाटक
(ख) लव और कुश
(ग) चंद्रकेतु
(घ) वाल्मीकि

प्र. 16. हर्षवर्द्धन की सभा में कौन-कौन कवि थे?
प्र. 17. *प्रियदर्शिका* और *रत्नावली* नाटिकाएँ किसने लिखीं?
प्र. 18. भट्टनारायण किस समय में हुए? उनका कौन-सा नाटक प्रसिद्ध है?
प्र. 19. नीचे लिखे नाटकों के लेखकों के नाम लिखिए—

(क) प्रबोधचन्द्रोदय
(ख) मोहराजपराजय
(ग) प्रियदर्शिका
(घ) अनर्घराघव
(ङ) संकल्पसूर्योदय
(च) हनुमन्नाटक

प्र. 20. राजशेखर की रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
प्र. 21. वत्सराज ने कितने प्रकार के रूपकों की रचना की थी?
प्र. 22. आधुनिक संस्कृत नाटकों के कथानक किन विषयों पर आधारित हैं? स्पष्ट कीजिए।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished